# गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों का शिक्षा के विकास में योगदान

पवन कुमार मिश्रा*

*शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना सरकार का कर्तव्य है, जिसमें नागरिकों की पहल भी महत्वपूर्ण है। नागरिकों की पहल का ही परिणाम गैर-सरकारी संस्थान हैं, जो अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा सामाजिक शिक्षा के क्षेत्र में एक आशा की किरण बनकर उभरे हैं। भारत में गैर-सरकारी संस्थान बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने में योगदान दे रहे हैं। ये गैर-सरकारी संस्थान नवीनता और आधुनिक तकनीकी के साथ अपने कार्यों को कार्यान्वित कर रहे हैं। इस शोध पत्र में दक्षिणी दिल्ली के एक गैर-सरकारी संस्थान 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' में पढ़ने वाले 50 बच्चों और वहाँ के 10 शिक्षकों का चयन कर विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित शोध के परिणाम दिए गए हैं।*

शिक्षा प्रत्येक देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास की कुंजी है। शिक्षा प्रत्येक समाज की ज़रूरत है, प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति एवं विकास का एक आवश्यक साधन है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्श, ज्ञान, संस्कृति, विश्वास तथा परम्पराओं को हस्तांतरित करता है। अकसर यह देखा गया है कि जिस देश में साक्षरता की दर जितनी कम होती है, वह देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से उतना ही पिछड़ा हुआ होता है, वहाँ के नागरिक भी गरीबी और बेरोज़गारी से पीड़ित होते हैं। इसके विपरीत, जिन देशों में साक्षरता की दर जितनी अधिक होती है, वे देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से संपन्न होते हैं, वहाँ के नागरिकों का जीवन स्तर भी उच्च कोटि का होता है।

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, प्रत्येक राष्ट्र की ज़रूरत है। कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों को शिक्षित किए बिना विकास पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता है। शिक्षा के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार ने शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया है। मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं ने बच्चों को विद्यालयों की ओर आकर्षित किया है, जिससे प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान की जा सके। परंतु, सरकार के इन प्रयासों के बाद भी बहुत-से बच्चे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। कुछ बच्चों के पास पढ़ाई के साधन नहीं होते तो कुछ

**प्रवक्ता,* शिक्षा संकाय, इंस्टीट्यूट ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़, शेख़ सराय, नयी दिल्ली–110 017

बच्चे गरीबी से मजबूर होकर पढ़ाई छोड़कर किसी-न-किसी काम-धंधे में लग जाते हैं। शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना सरकार का कर्तव्य है, पर देश की 130 करोड़ की आबादी का बोझ सरकार पर भारी पड़ता है। ऐसे में नागरिक पहल महत्वपूर्ण हो जाती है। नागरिकों की पहल का ही परिणाम ये गैर-सरकारी संस्थान हैं, जो स्वयं के प्रयासों द्वारा सामाजिक शिक्षा के क्षेत्र में एक आशा की किरण बनकर उभरे हैं। भारत में गैर-सरकारी संगठनों का नीति-वाक्य, सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना है। गैर-सरकारी संस्थान नवीनता और प्रयोगात्मक विधि के ज़रिए ही उन क्षेत्रों तक अपने कार्यों को पहुँचा रहे हैं, जहाँ सरकारी सेवाएँ पूर्ण रूप से नहीं पहुँच पा रही हैं।

शोध की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता मुख्य रूप से हमारी सरकार और समाज के साथ-साथ उन सभी लोगों के लिए भी है जो अपने व्यक्तिगत या सामूहिक प्रयासों द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहते हैं। वर्तमान समय में ये गैर-सरकारी संस्थान पर्यावरण, स्वास्थ्य, बाल-श्रम उन्मूलन, शिक्षा, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों का संरक्षण, उपभोक्ता संरक्षण, आपदा प्रबंधन आदि विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत ही सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। गैर-सरकारी संस्थानों की इन गतिविधियों से करोड़ों भारतवासियों को लाभ हो रहा है, लेकिन बिना किसी लाभ के उद्देश्य से काम करने वाले इन संस्थानों के प्रति लोगों में पर्याप्त चेतना का अभाव है। आज भारत में सामाजिक सरोकारों और ज़रूरतों के प्रति गैर-सरकारी संस्थानों के सकारात्मक दृष्टिकोण को देखते हुए, इन संस्थानों पर व्यापक शोध होने की ज़रूरत भी है।

भारतीय उद्योग परिसंघ (सी.आई.आई.) रिपोर्ट, 2013 के अनुसार, 'देश को विकास पथ पर आगे बढ़ाने के लिए सरकार व्यक्तिगत पहल की आवश्यकता महसूस कर रही है।' लोगों के जीवन स्तर में सुधार की आवश्यकता को देखते हुए और लोगों में साक्षरता की दर को बढ़ाने के लिए गैर-सरकारी संस्थान विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। इससे लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में बहुत मदद मिल रही है। गैर-सरकारी संस्थान किसी भी क्षेत्र के विकास में बेहतर मदद कर सकते हैं, क्योंकि वे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी कार्यप्रणाली में लचीलापन ला सकते हैं और इस प्रकार विकास की एकीकृत परियोजनाएँ अपना सकते हैं। लोगों के साथ सीधा संपर्क होने के कारण वे स्थानीय लोगों की, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी मदद कर सकते हैं।

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986* में भी सरकार ने शिक्षा के प्रबंधन एवं शिक्षा के विकास के लिए गैर-सरकारी संस्थानों के जुड़ाव एवं उनके सहयोग की बात की है। इसमें कहा गया है कि शिक्षा का प्रबंध करना सरकार का कर्तव्य है, लेकिन देश की बढ़ती आबादी और सीमित संसाधनों को देखते हुए इसमें नागरिकों की पहल भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें कहा गया है कि गैर-सरकारी संस्थानों के जुड़ाव एवं लोगों के स्वयं के प्रयासों

द्वारा ही शिक्षा-दर में वृद्धि की जा सकती है और देश के कोने-कोने में सबको शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

### शोध अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना।
- यह पता लगाना कि इन गैर-सरकारी संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ किस सीमा तक दूर हो रही हैं।
- बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा अपनाई जा रही पाठ्यचर्या और प्रयोग की जा रही अनुदेशात्मक सामग्री का पता लगाना।

### शोध विधि

यह शोध 'विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि' पर आधारित था। विवरणात्मक अनुसंधान वर्तमान से संबंधित होता है और अनुसंधान के अंतर्गत घटना के स्तर को निर्धारित करता है।

### न्यादर्श

इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में दक्षिणी दिल्ली के एक गैर-सरकारी संस्थान 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' में पढ़ने वाले 50 विद्यार्थियों और वहाँ के 10 शिक्षकों का चयन किया गया था।

### उपकरण

इस शोध में शोधक द्वारा आँकड़ों का संकलन अवलोकन, प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियों द्वारा किया गया है। आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए एक गैर-सरकारी संस्थान में पढ़ने वाले 50 विद्यार्थियों और वहाँ पढ़ाने वाले 10 शिक्षकों को लिया गया। यह शोध प्रक्रिया मात्रात्मक एवं गुणात्मक है। इसमें आँकड़ों को एकत्र करने के पश्चात् सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

### शोध अध्ययन की सीमाएँ

शोध में दक्षिणी दिल्ली के एक क्षेत्र से केवल एक गैर-सरकारी संस्थान को लिया गया। यह गैर-सरकारी संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है।

### नई दिशा शिक्षण संस्थान' की पृष्ठभूमि

'नई दिशा शिक्षण संस्थान' एक गैर-सरकारी संस्थान है, जो शिक्षा के द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वर्ष 2000 में बुद्धिजीवी व्यक्तियों के एक समूह ने अपने आस-पास के क्षेत्रों में निर्माणाधीन इमारतों में कार्यरत श्रमिकों के बच्चों के बारे में यह महसूस किया कि अगर इन बच्चों को भी समाज के अन्य बच्चों के समकक्ष लाना है तो इनको भी शिक्षित करने की आवश्यकता है। इस समूह ने समाज के इन गरीब और पिछड़े घरों के बच्चों के लिए शिक्षा 'दिशा' नामक शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जिसमें विस्थापित श्रमिकों, मज़दूरों एवं आस-पास के घरों में काम करने वाले श्रमिकों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस समूह ने वर्ष 2005 में 'दिशा शिक्षण संस्थान' का पंजीकरण एक गैर-सरकारी संगठन के रूप में कराया और इस संस्थान का नाम 'दिशा' से बदल कर 'नई दिशा शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्थान' रखा।

वर्ष 2000 में 12 बच्चों के साथ इस शिक्षण संस्थान की स्थापना हुई थी और अब वर्तमान में इस संस्थान के साथ लगभग 500 बच्चे जुड़ चुके हैं, जिनको 'नई दिशा' द्वारा नि:शुल्क लेखन-सामग्री, किताब-कॉपी, वर्दी एवं दैनिक पौष्टिक आहार प्रदान किया जाता है। इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष यहाँ के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। इस शिक्षण संस्थान में बच्चों को बुनियादी शिक्षा के अलावा व्यावसायिक प्रशिक्षण, कंप्यूटर शिक्षा, हस्तकला, नृत्य, संगीत, नाटक आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

## व्याख्या एवं विश्लेषण

यह शोध मुख्य रूप से 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' की रूपरेखा, यहाँ की कार्य पद्धति तथा प्राप्त सूचनाओं की व्याख्या और विश्लेषण पर आधारित है। शोधक ने 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' (एक गैर-सरकारी संस्थान) में पढ़ने वाले बच्चों, उनके अभिभावकों तथा वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों से अवलोकन, साक्षात्कार और प्रश्नावली विधियों द्वारा आँकड़े एकत्रित किए। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण कर इस संस्थान के विषय में तथ्यों, विचारों और अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1 के अनुसार शोधक द्वारा 'नई दिशा' में पढ़ने वाले बच्चों से पूछा गया कि क्या 'नई दिशा' में आना आपके लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है? तब ज़्यादातर बच्चों का जवाब "हाँ" में था। यहाँ पढ़ने वाले लगभग 75 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह मत था कि यहाँ आने से हमें हमारे भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिल रही है। 80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि यहाँ आने से उनकी निर्णय निर्माण क्षमता का विकास हुआ है, जबकि 30 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि यहाँ पढ़ने से उनको दूसरे विद्यालयों में दाखिला लेने में मदद मिली है। वहीं 65 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि यहाँ आने से हमारे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

**तालिका 1— संस्थान में आने से बच्चों को मिलने वाला लाभ**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिली | 75% |
| 2. | निर्णय निर्माण क्षमता का विकास हुआ | 80% |
| 3. | विद्यालय में दाखिला लेने में मदद मिली | 30% |
| 4. | आत्मविश्वास में वृद्धि हुई | 65% |
| 5. | कोई अन्य | 0% |

तालिका 2 के अनुसार शोधक द्वारा 'नई दिशा' में पढ़ने वाले बच्चों से पूछा गया कि इस संस्थान में पढ़ाने वाले शिक्षक क्या आपकी शैक्षिक समस्याओं को दूर करने में आपकी सहायता करते हैं? तो यहाँ सभी विद्यार्थियों का यह मत था कि उनके शिक्षक उनकी शिक्षा से संबंधित समस्याओं को दूर करने में उनकी सहायता करते हैं। 98 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि उनके शिक्षक उनकी शैक्षिक दुविधाओं को दूर करने में उनकी सहायता करते हैं, जबकि 2 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसा नहीं मानते। 25 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि उनके शिक्षक उनको डाँटते हैं/मारते हैं/सज़ा देते हैं; जबकि 75 प्रतिशत

**तालिका 2 — विद्यार्थियों की समस्या दूर करने में शिक्षकों का योगदान**

| क्र.सं. | प्रश्न | हाँ | नहीं |
|---|---|---|---|
| 1. | क्या आपके शिक्षक आपकी शिक्षा से संबंधित समस्याओं को दूर करते हैं? | 100% | 0% |
| 2. | क्या आपके शिक्षक आपकी दुविधाओं को दूर करते हैं? | 98% | 2% |
| 3. | क्या आपके शिक्षक आपको डाँटते हैं/मारते हैं/सज़ा देते हैं? | 25% | 75% |
| 4. | क्या आपके शिक्षक आपको अतिरिक्त समय देते हैं? | 100% | 0% |
| 5. | क्या आपके शिक्षक आपका गृह कार्य हर रोज़ जाँचते हैं? | 65% | 35% |

विद्यार्थी ऐसा नहीं मानते। सभी विद्यार्थी एक मत थे कि उनके शिक्षक उनको अतिरिक्त समय देते हैं। वहीं, 65 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि उनके शिक्षक उनको रोज़ गृह कार्य देते हैं; जबकि 35 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसा नहीं मानते।

तालिका 3 के अनुसार शोधक द्वारा 'नई दिशा शैक्षिक संस्थान' में पढ़ाने वाले शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता के विषय पर शिक्षकों से साक्षात्कार के द्वारा जानकारी प्राप्त करने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ के शिक्षकों का शैक्षिक स्तर काफ़ी अच्छा है। यहाँ के सभी शिक्षक स्नातक हैं, साथ ही 70 प्रतिशत शिक्षकों ने स्नातकोत्तर, 50 प्रतिशत शिक्षकों ने जे.बी.टी. व एन.टी.टी. और 60 प्रतिशत शिक्षकों ने बी.एड. की उपाधि भी ग्रहण की हुई है।

**तालिका 3 — शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता**

| क्र. स. | शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता | योग्यता प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1. | स्नातक | 100% |
| 2. | स्नातकोत्तर | 70% |
| 3. | जे.बी.टी. और एन.टी.टी. | 50% |
| 4. | बी.एड. | 60% |

तालिका 4 के अनुसार शोधक द्वारा 'नई दिशा' में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से पूछा गया कि शिक्षण के दौरान आपको संबंधित विषय का ज्ञान देने के लिए आपके शिक्षक कौन-कौन सी शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते हैं? तो 10 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना था कि उनके शिक्षक पढ़ाते समय चार्ट पेपर का प्रयोग करते हैं। 65 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि उनके शिक्षक किताबों (रा.शै.अ.प्र.प.) के द्वारा उन्हें पढ़ाते हैं। 10 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि पढ़ाते समय उनके शिक्षक दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करते हैं, 20 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना था कि उनके शिक्षक बेकार सामग्रियों का पुनः प्रयोग करके, उन्हें पढ़ाते हैं और 30 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना था कि उनके शिक्षक उनको विषय-वस्तु का ज्ञान देने के लिए अन्य गतिविधियों (जैसे — भ्रमण, क्रियाकलाप, वर्कशीट) का सहारा लेते हैं।

**तालिका 4 — शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली शिक्षण सामग्री**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | चार्ट | 10% |
| 2. | किताब | 65% |
| 3. | दृश्य-श्रव्य सामग्री | 10% |
| 4. | बेकार सामग्री का पुनः प्रयोग | 20% |
| 5. | कोई अन्य | 30% |

तालिका 5 के अनुसार शोधक द्वारा 'नई दिशा' में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से पूछा गया कि यहाँ शिक्षण क्रिया के अलावा आप सबके लिए और कौन-कौन सी क्रियाएँ आयोजित की जाती हैं? तो 50 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना था कि उनके लिए कहानी-कथन; कहानी निर्माण आदि क्रियाएँ आयोजित की जाती हैं। 30 प्रतिशत विद्यार्थी विभिन्न नाटकों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। 45 प्रतिशत विद्यार्थी विभिन्न खेलों (फुटबॉल, टाइकोंडो, स्कैटिंग) में भाग लेते हैं। 40 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना था कि उनको संस्थान द्वारा आयोजित शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। 80 प्रतिशत विद्यार्थी यहाँ आयोजित कला और चित्रकला कार्यक्रमों से जुड़े हैं। वहीं, 95 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत है कि वे संस्थान द्वारा कराए जाने वाले सामूहिक कार्यक्रमों (दिवाली मेला, स्वच्छ भारत अभियान) में भाग लेते हैं।

**तालिका 5 — नई दिशा में कराई जाने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाएँ**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कहानी-कथन और कहानी-निर्माण | 50% |
| 2. | नाटक और सांस्कृतिक कार्यक्रम | 30% |
| 3. | खेल | 45% |
| 4. | शैक्षिक भ्रमण | 40% |
| 5. | कला और चित्रकला | 80% |
| 6. | सामूहिक क्रियाएँ | 95% |
| 7. | कोई अन्य (मेराथन) | 0.5% |

## निष्कर्ष

यह शोध शिक्षा के विकास में गैर-सरकारी संस्थानों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' नामक गैर-सरकारी संस्थान पर किया गया। इस शोध में कुछ महत्वपूर्ण बातें निकलकर सामने आईं जो इस प्रकार हैं—

- इस संस्थान में बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए विभिन्न प्रकार के नि:शुल्क कार्यक्रम (उपचारात्मक कक्षाएँ, ब्रिज कोर्स, व्यावसायिक कार्यक्रम, खेल, नुक्कड़-नाटक, नृत्य) चलाए जा रहे हैं, जो उनके सामाजिक, शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक विकास के लिए आवश्यक हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा बच्चों के आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि हुई है।
- इस संस्थान में पढ़ाने वाले शिक्षक, वहाँ के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं को दूर करने में उनकी सहायता करते हैं और उनके लिए निर्देशन एवं परामर्श की कक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है। यहाँ बच्चों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ (जैसे— शैक्षिक सामग्री, किताब-कॉपी, बस्ता, कपड़े, स्वेटर, मध्याह्न भोजन) नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं, ताकि उनके घरों की वित्तीय समस्याओं का उनकी शिक्षा पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच हेतु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है तथा बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान करके उनकी आर्थिक रूप से सहायता भी की जाती है।
- यहाँ के शिक्षक स्व-निर्मित पाठ्य सामग्री व रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। यहाँ के शिक्षकों द्वारा बच्चों को पढ़ाने के लिए विभिन्न शैक्षिक उपकरणों, जैसे — चार्ट पेपर, बोर्ड, ग्लोब, प्रोजेक्टर, कंप्यूटर, मानचित्र का प्रयोग किया जाता

है। यहाँ बच्चों को सीखने-सिखाने के लिए कहानी-कथन विधि, समूह-संवाद, भ्रमण, नाटक, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, खेल आदि क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता है।

## शैक्षिक महत्व

इस शोध अध्ययन का विशेष शैक्षिक महत्व निम्न प्रकार है—

- 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' की तरह ही विद्यालयों द्वारा भी अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनके लिए शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाना चाहिए।
- 'नई दिशा शिक्षण संस्थान' की तरह ही विद्यालयों/प्रशासन को शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रबंध करना चाहिए ताकि बच्चों को आत्मनिर्भर बनाया जा सके और शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें रोज़गार प्राप्त करने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।
- शिक्षकों को मानसिक व आर्थिक रूप से कमज़ोर विद्यार्थियों के साथ प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और संभव हो तो कक्षा के अलावा भी उनको अतिरिक्त समय देना चाहिए।
- शिक्षकों का कर्तव्य राष्ट्र का निर्माण करना है। अतएव शिक्षकों को अपने इस कर्तव्य का पालन प्रसन्नतापूर्वक और ईमानदारी के साथ करना चाहिए।

## संदर्भ

नई दिशा. http://nai–dishaindia.org से लिया गया है.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

भारत सरकार. 2013. *भारतीय उद्योग परिसंघ (सी.आई.आई.) रिपोर्ट, 2013*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.